UGC Approved Journal No – 40957
(IIJIF) Impact Factor- 4.172
Regd. No. : 1687-2006-2007 **ISSN 0974 - 7648**

J I G Y A S A

AN INTERDISCIPLINARY PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Chief Editor : ***Indukant Dixit***

Executive Editor : ***Shashi Bhushan Poddar***

Editor
Reeta Yadav

Volume 12 **June 2019** **No. V**

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.blogspot.com
www.jigyasabhu.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com
Mob. 9415390515, 0542 2366370

JIGYASA, ISSN 0974-7648, Vol. 12, No. V, June 2019

- **समावेशी शिक्षाए शिक्षण की नयी प्रणाली** **467-472**
  डॉ. अल्पना वर्मा, प्राचार्य एम्पल ड्रीम कालेज मध्य प्रदेश
  कृष्ण कुमार पाठक, शोध छात्र बरकतउल्ला विश्वाविद्यालय भोपाल मध्य प्रदेश
- **गुप्तकालीन उत्तर भारत की सामाजिक व्यवस्था में परिवर्त्तन के तत्त्व : एक अध्ययन** **473-477**
  श्री अरविन्द कुमार, ग्राम+पो. भतसारा, भाया-बरहरा कोठी, पूर्णिया, बिहार
- **भारत की अंदरूनी समस्याओं के प्रति चीन की नकारात्मक भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन** **478-482**
  डॉ. शंकर आर्य, कर्पूरी चौक, वार्ड नं. 21, मधेपुरा, बिहार
- **स्वामी विवेकानन्द के समाज दर्शन का विश्लेषणात्मक अध्ययन** **483-487**
  डॉ. रमेश ऋषि, मंत्री, कल्याण विभाग, बिहार सरकार
- **हिन्दी महिला आत्मकथा लेखन : व्यक्ति एवं समाज का जीवंत चित्रण** **488-494**
  विद्या देवी पटेल, शोध छात्रा, क्राइस्ट चर्च पी. जी. कालेज कानपुर
- **महिला तस्करीकरण में स्वयं महिलाओं की सहभागिता क्यों?** **495-499**
  डॉ. आस्था, मानवविज्ञान विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची।
- **आर्य संस्कृति के आलोक में आधुनिक नारी का कर्त्तव्य एवं दायित्व** **500-506**
  डॉ. मणीश कुमार भारती, संस्कृत विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार
- **'नीला चाँद' में वणित सांस्कृतिक चेतना का प्रवाह** **507-510**
  डॉ. राधिका कुमारी, हिन्दी विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
- **रससिद्धान्तः** **511-514**
  रामकुमार पाठक, शोधच्छात्र, साहित्यविभागः, संस्कृतविद्याधर्मविज्ञानसंकायः, काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य, वाराणसी
- **चम्पारन सत्याग्रह एवं गाँधी जी** **515-519**
  डॉ. प्रिया सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, गु.दे.म.पी.जी. कालेज, बलिया

समावेशी शिक्षाए शिक्षण की नयी प्रणाली

डॉ. अल्पना वर्मा *
कृष्ण कुमार पाठक **

विशिष्ट शिक्षा (Special Education), एकीकृत शिक्षा (Integrated Education) और समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) जैसे शब्द शैक्षिक शब्दावली में विकलांग बच्चों की शिक्षा के सन्दर्भ में प्रयुक्त होते रहे हैं। शब्दों की जुगाली करने वाले लोग इसे विशेष या एकीकृत शिक्षा से कुछ अलग कोई नयी चीज नहीं मानते हैं। वे इन शब्दों का प्रयोग आपस में अदल–बदल कर करते हैं।

''समावेशी शिक्षा'', शिक्षण की ऐसी प्रणाली है जिसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (Children with special Needs) को सामान्य बच्चों के साथ मुख्य धारा में शामिल किया जा सके। इसके तहत पठन–पाठन के अलावा विकलांग बच्चों के लिए बाधा–रहित (Barrier-Free) स्कूली माहौल का निर्माण कार्य भी शामिल है ''शिक्षण की इस नवीन प्रणाली से हाशिये पर वे वैसे बच्चे लाभान्वित होते हैं। जिन्हें अपनी दिनचर्या से लेकर पढ़ाई पूरी करने के लिए विशेष देख–भाल की आवश्यकता पड़ती है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चे सामान्यतः दृष्टि, श्रवण, अस्थि एवं अधिगम अक्षमता के साथ–साथ मानसिक मन्दता और बधिरांधता से ग्रस्त होते हैं।

समावेशन (Inclusion) कोई प्रयोग नहीं है जिसकी जाँच की जाए। यह एक मूल्य (Value) है जिसका अनुकरण किया जा सकता है। सभी बच्चे चाहे वे विकलांग हों अथवा नहीं, को शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार है। उन्हीं को भविष्य में देश के नागरिक बनना है।

देश के अधिकतर निजी विद्यालयों में 'विशेष शिक्षा' दृष्टिगोचर होती है, जो विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का नामांकन समावेशी शिक्षा देने के नाम पर करते हैं। इन विद्यालयों में बच्चे 'आते' हैं पर इसके अंग 'नहीं बन पाते'। बच्चों की विशेष आवश्यकता के मद्देनजर कोई बदलाव लाए बगैर उन्हें 'किसी तरह रख लेने' की दृष्टि अपनाई जाती है। जिससे उनका समावेशन नहीं हो पाता।

समावेशी शब्द का प्रचलन 1990 के दशक के मध्य में बढ़ा जब 1994 में सलामांका (स्पेन) में यूनेस्को द्वारा विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं पर विशेष विश्व सम्मेलन सुलभता और समता (Special Needs Education Access and Quality) का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में 92 सरकारों और 25 अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों ने हिस्सा लिया। सम्मेलन में यह उद्घोषणा भी की

* प्राचार्य एम्पल ड्रीम कालेज मध्य प्रदेश
** शोध छात्र बरकतउल्ला विश्वाविद्यालय भोपाल मध्य प्रदेश